

DPN 6310

Title : नित्यार्चनविधि / NITYĀRCANA VIDHI

Run. No. 7001

Cat. No. 42

Micro. No.

Subject ~~तान्त्रिक कर्मकाण्ड~~

Tāntrika. Ritual Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. /

Size in cms. 13.5 X 6.5

Folios 20

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor रत्नशंकर / राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS 922

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

१. इति स्नानविधिः समाप्तं । इति विभूतिधारणं ॥ इति नित्यार्चनं समाप्तं ॥
४. [मन्त्रप्रदानविधिः] वेलास्य लाचकं मन्त्रप्रदानं । तत्र मन्त्रः ॥

15

10

5



5

10

15

20

0 CMS

15

10

5



5

10

15

20

0 CMS

ॐ

अथ निरुक्तिधारा ॥ ॥ नामि य ॥ हं स्वाहा ॥ ३ ॥

लखदुयक ॥ ॐ हं वाष्पयामनमः ॥ ॥ ॐ अक्र

यरुद ॥ ३ ॥ ॥ नामि याय ॥ ॐ अक्रायरुद ॥ ३ ॥

ॐ अक्रुष्टायानिमः ॥ ॐ तर्जनीत्यनिमः ॥ ॐ मधुमा
न्यनिमः ॥ ॐ अनामिकायनिमः ॥ ॐ कनिष्ठायायनिमः ॥

ॐ कनकनयष्टायानिमः ॥ ॐ तिकनय्यास ॥ ॥

ॐ दयादि ॥ ॐ हं दयायनमः ॥ ॐ मित्रसंस्वाहा ॥ ॐ

गिरवायवीषद ॥ ॐ कं व वायदं ॥ ॐ न अ यायवव

द ॥ ॐ अक्रायरुद ॥ ॥ निरुक्तिकाय ॥ कर्मम

जामजापलय ॥ ॥ ॐ सिंघाजातायनमः ॥ ॐ वा

15
मदवायनमः॥ ऊँ अघात्रायनमः॥ ऊँ तस्युत्राय
नमः॥ ऊँ ङ्गीमानायनमः॥ अहं जयलथ ॥
10 लखनकाय ॥ ॥ अग्निवितिरुम् ॥ वायुवितिः
रुम् ॥ जलवितिरुम् ॥ स्कलवितिरुम् ॥ वामः
वितिरुम् ॥ सर्वरुने ष्टुद रुम् ॥ मन ष्टुतिरुम् ॥

5 ॥ ॥ विरुतिनितिय ॥ अंगुलाङ्ग कालाङ्ग दधुलाव
कपालसतिय ॥ मूलमकुन ॥ ॥ ऊँ ङ्गी दूङ्गी ऊँ
ऊः गिवायनमः॥ ॥ मालस कपालस क धूसरुद
यस नखवाहलस सकलिनीतिय ॥ १० ॥ जाय ॥
मूलमकुन ॥ ॥ माण ॥ उं नमः गिवायति ॥ दव

ब्रह्मणे नमः ॥ विष्णवे नमः ॥ रुद्राय नमः ॥ गरुडपदे नमः ॥ शिवे नमः ॥

सुलखन ॥ ॥ आसलिकाय ॥ नासिय ॥ ॥ विष्णु ३ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अथ दशवक्त्र ॥ ॥ दशवाय ॥ नासिय ॥ सूर्य ॥ ॥
 स्नानयावक ॥ गिवाय स्नाननमः ॥ गिवाय वन्दन
 नमः ॥ सिद्धलनतिक ॥ गिवाय सिद्धनमः ॥ अकन ॥
 गिवाय अदरनमः ॥ स्नानकाय ॥ गिवाय पूर्यन
 मः ॥ ॥ नासिय ॥ हांस्वाहा ॥ ३ ॥ आसनगत्य ॥

१५
ॐ आत्मनः ॐ दमासनं नमः ॥ ॐ आत्मनः वृष्यं नमः ॥
॥ ॥ गुह्यं नमः स्त्राययाय ॥ ॐ अस्वधुमधुलाकालं
१० धार्यं जनवनाचरं ॥ तस्य तं जयितं जन तस्येष्टीगु
रवनमः ॥ स्त्रानकायावक्य ॥ ॥ न्यासयाय ॥
ॐ भूमाय रुद्र ॥ ३ ॥ ॐ अंगुष्ठाख्यनिमः ॥ ॐ

५ तर्जनीख्यनिमः ॥ ॐ मधुमाख्यनिमः ॥ ॐ अनामि
काख्यनिमः ॥ ॐ कनिष्ठाख्यनिमः ॥ ॐ कत्रगत्रपु
ष्ठाख्यनिमः ॥ ॐ भिक्रयास ॥ हृदयादि ॥ ॐ हृ
दयाय नमः ॥ ॐ भिन्नसंस्वाहा ॥ ॐ भिन्नाय वीषः
॥ ॐ कवचाय हुं ॥ ॐ नय्याय वषट् ॥ ॐ

15
अरुणाय नमः ॥ तमाय नमः ॥ लिङ्गम्
दान ॥ ॥ ह्रीं श्रीं नमः ॥ अरुणाय नमः ॥ य
नमः ॥ अरुणाय नमः ॥ अरुणाय नमः ॥ अरुणाय नमः ॥
10 अरुणाय नमः ॥ अरुणाय नमः ॥ अरुणाय नमः ॥
मः ॥ लं सद्या जाताय पश्चिमवकाय नमः ॥ ॥

5 अरुणाय नमः ॥ अरुणाय नमः ॥ अरुणाय नमः ॥
अरुणाय नमः ॥ अरुणाय नमः ॥ अरुणाय नमः ॥
नमः ॥ अरुणाय नमः ॥ अरुणाय नमः ॥ अरुणाय नमः ॥
नमः ॥ अरुणाय नमः ॥ अरुणाय नमः ॥ अरुणाय नमः ॥
नमः ॥ अरुणाय नमः ॥ अरुणाय नमः ॥ अरुणाय नमः ॥

15
10
ॐ लया गाय आवाहनादि वचनाद तपूष्यनि
मः॥ ॥ थ डा क अर्घ्या उया ता हा य या लखि
नहाय ॥ हां आत्मन मिथुन नमः॥ दिथ नि
य ॥ हां आत्मन वदुन नमः॥ स्त्रान कूय ॥ हां
आत्मन पूष्यनिमः॥ ॥ थ वत ध्यान काय ॥

5
विथ स्त्रान जाकि आना वान ॥ ऊमि गलायतन
दव र्व या निमना हर् ॥ धम यं कल्यातनो मूल
सखा सीन सहा मया ॥ आत्मन ध्यान पूष्यनिमः॥
॥ ॥ आवाहन ॥ जाकि लेख हिल काव देव याः
कमा दते ॥ ऊमि गलायतन जमः॥ स्त्रायन ॥ ॥

15
पिनाकधृक् ॐ हाग ॐ हतिष्ठ ॥ ॥ भिवा
यस्तान्नमः ॥ चन्दन ॥ भिवाय चन्दनमः ॥
10 सिन्दूर ॥ भिवाय सिन्दूरमः ॥ भिवाय यक्ष
रत्नमः ॥ स्वान ॥ भिवाय यक्षमः ॥ ॥
आसनतय ॥ स्वान चतस्रनातन ॥ ॥ आध

5
रगकथनमः ॥ अनकासनायनमः ॥ सुन्दाय
नमः ॥ नागायधायनमः ॥ यद्भासनायनमः
॥ यगायनमः ॥ कभनायनमः ॥ कर्षुकाः
यनमः ॥ वृषणसनायनमः ॥ सिंहासनाय
नमः ॥ ॥ गाकिह्वानविथसथुदावतय ॥

12 5 11 13 14

15

10

5



5

10

15

20

0 CMS

॥ ॥ देवकृष्ण नचन्दना दत्तपूषकाय ॥ ॥ ज्ञानं
गलायगन नृवति ॥ मिवायध्वानपूषानमः ॥
गुयाउरुलि ॥ वन्दना दत्तपूषकाय स्वयालनम
॥ ॥ ज्ञानमिवायध्वानमः ॥ २ ॥ श्रयाजलिपूष
नमः ॥ ॥ हृदयादितया ॥ ॥ ज्ञानहृदयाय

नमः ॥ ज्ञानमिवायध्वानमः ॥ हृदयादितया ॥
कवचाय हृद ॥ ज्ञानमिवायध्वानमः ॥ ज्ञानमिवायध्वानमः
यहृद ॥ ॥ अवाहनादिवन्दना दत्तपूषाः
नमः ॥ ॥ ज्ञानमिवायध्वानमः ॥ अर्घ्याय लखचक्र
नयदवस्त्र ॥ ॥ ज्ञानमिवायध्वानमः ॥ लखचक्र

श्रीस्वस्त्येव तानमहदये प्रविश्य ॥
यावन्नेवयसतय ॥ ५ ॥ अः भूकाय रुद्र ॥ ३ ॥
वचनाथ यद् रुद्र स्त्राह ॥ ॥ सौर्विष मडी दम
यो ॥ ॥ कलस चोड स्वान जाकि न पुना ह्य
य ॥ लख कु उ नू र य द व स्क ॥ ना सि य ॥ ॥
थ डान भू धा या ल ख न हा य ॥ आत्म न सि वि न

नमः॥ वन्दनीयः॥ आत्मनश्चन्दननिमः॥ म
 पुलसर्वाङ्गस्त्वान्दवस्त्वान्दवस्त्वान्दवस्त्वान्दवः
 कृत्य॥ ॥ आत्मनश्चन्दननिमः॥ ॥ आदित्यः
 लखस्त्वान्दवस्त्वान्दवस्त्वान्दवस्त्वान्दवः॥ ॥ अतः
 गिवपूजापूजितास्त्विन्कमस्त्वान्दवस्त्वान्दवः॥

15
वहु॥ ॥ सूर्यसाक्षिथय॥ ॥ जांचनतु
मिवयूडा निमिश्रार्थं कृगकर्मलसाक्षि
ग्रीसूर्योय अर्घनमः॥ दृष्यनिमः॥ दवपूजा
10 मालकायाय॥ ॥ नासिय॥ विष्णु ३ ॥
क्षय॥ ॥ अर्घा दूयक॥ स्वानकाकाय॥

5 ॐ तिनिषाच्चनसमार्क॥ ॥ गुरुलवगु॥
सर्वत २२ मिति माघगु पं अदिश्ववात्रथ
कृष्णसिष्यमवातयतदिक्कावियादिनगमि
सवियाग्रीनत्तर्गकनय वायाविया ॥
थसूर्यसिष्यानकनमइशलगुरु॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो श्रीगुरुवे ॥ ॥
आदौ हस्तपादमुखप्रक्षाल्य ॥ दंतधावनं च स्नानादि
सौचं विधाय ॥ मौनयाऽह्निद्विउपासं चो
ने मुंथियमतेव ॥ सन्ति कुहूथनविधिथ्ये स्ना
तया यधुनकात्रचोने ॥ गुरुणा विधिथ्ये देव

नश्वाकतवधिले पतुवासन
गोय

पूजायाय सोत्रपर्यंतं ॥ ॥ धनशिष्यशोधनया
य ॥ ॐ ह्रस्वस्वाय फट् ॥ तेन मंत्रेण सर्वो गंकुशे
नस्पृसेत् ॥ ॥ धनगुरुमंडलदयकात्रं दधु
सवाकवाक ३ पिथुस ४ रुग्नेदादि धनं पिः
ने २ धनं पिने १० तये ॥ त्रैकालम् १ वस्त्र १ गव १ २

15
जो ना जो १ ग्वाल १ अक्षत द्वा फेला दक्षिणामो १ मण्डला
दधुसतये ॥ ॥ ततः पूजनं ॥ ॐ इन्द्राय नमः ॥ ॐ अग्नये २
॥ ॐ यमाय २ ॥ ॐ नैऋत्याय नमः ॥ ॐ वरुणाय २ ॥ ॐ वाय
वे २ ॥ ॐ रुद्राय २ ॥ ॐ ईशानाय २ ॥ ॐ अंधसे २ ॥ ॐ इंद्रा
य २ ॥ १० ॥ ॥ ॐ आदित्याय २ ॥ ॐ सोमाय २ ॥ ॐ अंगा
य २ ॥ ॐ उधाय २ ॥ ॐ दृहस्यातये २ ॥ ॐ भुक्ताय २ ॥ ॐ

5
शनेभ्यराय २ ॥ ॐ गृहवे २ ॥ ॐ केतवे २ ॥ २ ॥ ॥ ॐ ऋ
ग्वेदाय २ ॥ ॐ यजुर्वेदाय २ ॥ ॐ सामवेदाय २ ॥ ॐ अथ
र्ववेदाय २ ॥ ४ ॥ ॥ मध्ये ॥ ॐ चन्द्रमण्डलाय २ ॥ ॐ
सूर्यमण्डलाय २ ॥ ॐ अग्निमण्डलाय २ ॥ ॐ गुरुमण्डला
य २ ॥ ३ ॥ ॐ गुरुमण्डलाय इदमासनं नमः ॥ पुष्यं नमः ॥
एवं चन्दनसिंदूरयजोपवीतः पुष्यः वाछादनः दक्षिणा

15
मालारघानः खालः तवसि धूपदीपः ॥ ॥ स्तोत्रः ॥ ॐ मण्ड
यनमस्तुभ्यं सर्वतत्त्वाधिपायय ॥ भूर्भुवः स्वः प्रकाशाय विश्व
रूपाय ते नमः ॥ १ ॥ ॐ गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु गुरुदेवमहे
श्वरः ॥ गुरुदेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ २ ॥ ॐ अ
खण्डमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरं ॥ तत्पदं दर्शनं येन
तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ३ ॥ अत्र गंधादि ॥ मंडलविशर्ज

नं ॥ ॐ उद्धृतं तमसः ॥ ॥ मण्डलसंख्योऽप्युपदार्थः स
मस्तं कायावधनं गुरुस्तत्त्वज्ञानावविधे ॥ दक्षि
णाविधे मोहः १ स्तुतिस्तुति ॥ गुरुनमस्कारयाय ॥
ध्वते धुनकाव नित्यस्नानाच चके गुरुणा ॥ धनदेव
यात भेदि मोहः १ च १ नं क्वाल स्तुति स्तुति जीनकाव

देवदर्शनयाचके॥ ॥वेलासलाचकंमंत्रप्रदानं॥तत्र
मंत्रः॥ॐ ह्रीं शिवाय नमः॥ॐ ह्रीं सद्योजाताय नमः॥ॐ
ह्रीं वामदेवाय नमः॥ॐ ह्रीं अधोराय नमः॥ॐ ह्रीं तपु
ह्याय नमः॥ॐ ह्रीं ईशानाय नमः॥ अतेडेनके॥
अतेधुनकारदेवपूजायाके॥ धूपदिप

15

10

5



5

10

15

20

0 CMS

15

10

5



5

10

15

20

0 CMS